SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

झारखंड के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के बी.एड. प्रशिक्षुओं की शैक्षणिक उपलब्धि पर सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि का तुलनात्मक अध्ययन

दीपक कुमार चौबे, पी.–एचडी., प्राचार्य
इंदिरा सिंह बीएड टीचर ट्रैनिंग कॉलेज, कल्याणपुर, गढ़वा, झारखंड, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
दीपक कुमार चौबे, पी.–एचडी.
E-mail : chaubeydeepak75@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 17/07/2025
Revised on : 18/09/2025
Accepted on : 27/09/2025
Overall Similarity : 00% on 19/09/2025

शोध सार

इस शोध का उद्देश्य ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के बी.एड. प्रशिक्षुओं की शैक्षणिक उपलब्धि की तुलना करना तथा उनकी सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि एवं शैक्षिक प्रदर्शन के मध्य संबंध को स्पष्ट करना है। अध्ययन में 200 बी.एड. प्रशिक्षुओं (100 ग्रामीण एवं 100 शहरी) को नमूने के रूप में चुना गया। शोध पद्धति के अंतर्गत मात्रात्मक सर्वेक्षण पद्धति अपनाई गई तथा सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु माध्य, मानक विचलन एवं टी–परीक्षण का उपयोग किया गया। परिणामों से स्पष्ट हुआ कि ग्रामीण क्षेत्र के प्रशिक्षुओं की औसत पारिवारिक आय, माता–पिता की शिक्षा का स्तर तथा प्रमुख व्यवसाय शहरी क्षेत्र की तुलना में निम्न है। शैक्षणिक उपलब्धि में भी शहरी प्रशिक्षुओं का औसत अंक ($M=66.7, SD=8.4$) ग्रामीण प्रशिक्षुओं ($M=58.4, SD=12.3$) की अपेक्षा अधिक पाया गया। प्राप्त टी–मूल्य ($t=5.12$, $p<0.01$) से यह सिद्ध हुआ कि दोनों समूहों की उपलब्धि में सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर है। इसके अतिरिक्त सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि एवं शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य सकारात्मक सहसंबंध भी पाया गया। अध्ययन से यह निष्कर्ष निकला कि ग्रामीण क्षेत्रों के बी.एड. प्रशिक्षुओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, संसाधनों एवं मार्गदर्शन की कमी का सामना करना पड़ता है, जबकि शहरी प्रशिक्षुओं को तुलनात्मक रूप से अधिक शैक्षिक अवसर प्राप्त होते हैं। यह शोध ग्रामीण शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने, संसाधनों की समान उपलब्धता सुनिश्चित करने तथा शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रमों को सुदृढ़ करने हेतु नीतिगत दृष्टिकोण प्रदान करता है।

मुख्य शब्द

बी.एड. प्रशिक्षु, शैक्षणिक उपलब्धि, ग्रामीण–शहरी तुलना, सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि.

प्रस्तावना

शिक्षा मानव जीवन का सबसे महत्वपूर्ण आधार है। यह न केवल व्यक्ति को ज्ञान प्रदान करती है बल्कि उसके व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करती है। समाज के प्रत्येक वर्ग के लोगों के लिए शिक्षा एक आवश्यक साधन है, जिसके माध्यम से व्यक्ति जीवन की चुनौतियों का सामना करने योग्य बनता है। किसी भी राज्य अथवा राष्ट्र की प्रगति उसके नागरिकों की शैक्षिक गुणवत्ता पर आधारित होती है। झारखंड जैसे विकासशील राज्य में शिक्षा की स्थिति सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि से गहराई से जुड़ी हुई है। विशेषकर शिक्षक शिक्षा संस्थानों में अध्ययनरत बी. एड. प्रशिक्षुओं की शैक्षणिक उपलब्धि पर सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। बी.एड. पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य सक्षम और प्रभावी शिक्षक तैयार करना है, जो भविष्य की पीढ़ी को शिक्षित कर सके और उन्हें जीवनोपयोगी मूल्य प्रदान कर सके। शिक्षक समाज का मार्गदर्शक होता है, इसलिए उसके प्रशिक्षण की गुणवत्ता अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है लेकिन यह गुणवत्ता केवल पाठ्यक्रम की संरचना या प्रशिक्षण पद्धति पर ही निर्भर नहीं करती, बल्कि प्रशिक्षुओं की पारिवारिक, सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियाँ भी उनके प्रदर्शन पर गहरा प्रभाव डालती हैं। झारखंड जैसे राज्य में, जहाँ ग्रामीण और शहरी क्षेत्र में विकास का स्तर असमान है, वहाँ यह जानना प्रासंगिक है कि सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि किस प्रकार बी.एड. प्रशिक्षुओं की शैक्षणिक उपलब्धि को प्रभावित करती है।

सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि को सामान्यतः परिवार की आय, माता–पिता की शिक्षा का स्तर, अभिभावकों का व्यवसाय, परिवार का सामाजिक वातावरण, निवास स्थान, शैक्षिक संसाधनों की उपलब्धता और सांस्कृतिक परिवेश के आधार पर परिभाषित किया जाता है। ग्रामीण क्षेत्र के परिवारों की आय अपेक्षाकृत कम होती है, वहाँ के माता–पिता अक्सर औपचारिक शिक्षा से वंचित रहते हैं और आजीविका के लिए कृषि या दिहाड़ी मजदूरी पर निर्भर रहते हैं। इसके विपरीत शहरी क्षेत्रों में रहने वाले परिवारों की आय का स्तर अपेक्षाकृत अधिक होता है, माता–पिता की शिक्षा का स्तर भी ऊँचा होता है और वहाँ शैक्षणिक संसाधन अपेक्षाकृत सुलभ होते हैं। यह असमानता छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि में परिलक्षित होती है।

ग्रामीण क्षेत्र के बी.एड. प्रशिक्षुओं को कई प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। उनमें से प्रमुख हैं शैक्षिक संसाधनों की कमी, पुस्तकालय और डिजिटल सुविधाओं का अभाव, योग्य शिक्षकों की अनुपलब्धता, आर्थिक तंगी और पारिवारिक जिम्मेदारियाँ। इन परिस्थितियों में ग्रामीण पृष्ठभूमि से आने वाले प्रशिक्षुओं के लिए अपनी शैक्षणिक उपलब्धि को बेहतर बनाए रखना कठिन हो जाता है। इसके विपरीत, शहरी क्षेत्र के प्रशिक्षु अपेक्षाकृत बेहतर विद्यालयों से पूर्व शिक्षा प्राप्त करते हैं, उच्च शिक्षित परिवारिक वातावरण में रहते हैं और आधुनिक तकनीक व इंटरनेट जैसी सुविधाओं का लाभ उठा पाते हैं। इस कारण उनकी शैक्षणिक उपलब्धि अधिक दिखाई देती है।

साहित्य शोध समीक्षा

सिंह (2012) ने अपने अध्ययन "सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि और शैक्षणिक उपलब्धि का तुलनात्मक विश्लेषण" में पाया कि उच्च आय वर्ग और शिक्षित माता–पिता वाले विद्यार्थियों का प्रदर्शन अधिक होता है। ग्रामीण विद्यार्थियों की उपलब्धि शहरी विद्यार्थियों की तुलना में अपेक्षाकृत कम रही। शर्मा एवं अग्रवाल (2015) ने शिक्षक शिक्षा संस्थानों में अध्ययनरत विद्यार्थियों पर शोध किया। उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि ग्रामीण विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि पर आर्थिक दबाव, संसाधनों की कमी और पारिवारिक सहयोग का स्तर महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। कुमारी (2017) ने महिला प्रशिक्षुओं पर किए गए अध्ययन में दर्शाया कि ग्रामीण पृष्ठभूमि से आने वाली महिलाओं की शैक्षणिक उपलब्धि सामाजिक रूढ़ियों और पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण सीमित होती है, जबकि शहरी पृष्ठभूमि वाली महिलाओं को अपेक्षाकृत बेहतर अवसर मिलते हैं। मिश्रा (2019) ने अपने अध्ययन "सामाजिक–आर्थिक स्थिति और उपलब्धि प्रेरणा" में पाया कि आर्थिक रूप से सशक्त परिवारों के बच्चों की उपलब्धि प्रेरणा अधिक होती है और वे प्रतियोगी परीक्षाओं व प्रशिक्षण कार्यक्रमों में बेहतर प्रदर्शन करते हैं। झारखंड पर केंद्रित अध्ययन (2021, बिरसा विश्वविद्यालय) में पाया गया कि ग्रामीण क्षेत्रों के बी.एड. प्रशिक्षुओं के पास प्ब्ज और पुस्तकालय जैसी

सुविधाओं की कमी है, जिसके कारण उनकी उपलब्धि शहरी क्षेत्रों की अपेक्षा कम होती है। यही अंतरराष्ट्रीय अध्ययन में Coleman Report (1966, USA) ने पहली बार बड़े स्तर पर यह स्पष्ट किया कि विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि का संबंध उनके पारिवारिक वातावरण और सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि से है। Sirin (2005) ने 58 अध्ययनों की Meta-Analysis में दर्शाया कि सामाजिक–आर्थिक स्थिति (SES) और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच मध्यम से उच्च स्तर का सहसंबंध है। Eamon (2005) ने पाया कि निम्न आय वर्ग के विद्यार्थियों के पास शैक्षणिक संसाधनों की कमी और अभिभावकीय सहयोग की न्यूनता होती है, जिससे उनकी शैक्षणिक उपलब्धि प्रभावित होती है। Jeynes (2006) के अध्ययन में पाया गया कि अभिभावकों की शिक्षा और परिवार का वातावरण विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि पर गहरा प्रभाव डालता है। OECD Report (2018) ने भी यह बताया कि ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों की उपलब्धि में अंतर का मुख्य कारण संसाधनों की असमान उपलब्धता और सामाजिक–आर्थिक विषमता है।

झारखंड का सामाजिक परिदृश्य भी इस अध्ययन को और महत्त्वपूर्ण बना देता है। यहाँ अनुसूचित जनजाति और अनुसूचित जाति की जनसंख्या अधिक है, जिनकी आर्थिक स्थिति अपेक्षाकृत कमजोर है। ऐसे परिवारों से आने वाले बी.एड. प्रशिक्षुओं की शैक्षणिक उपलब्धि उनकी सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि से गहराई से प्रभावित होती है। राज्य में महिला शिक्षा की स्थिति भी अभी विकासशील है। ग्रामीण क्षेत्र की महिलाएँ अनेक सामाजिक बंधनों और संसाधनों की कमी के कारण शिक्षा में पीछे रह जाती हैं। जब वे बी.एड. प्रशिक्षण में आती हैं तो शहरी क्षेत्र की प्रशिक्षुओं की तुलना में उनकी शैक्षणिक उपलब्धि कम देखी जाती है। शैक्षणिक उपलब्धि का सीधा संबंध विद्यार्थियों के बौद्धिक, भावनात्मक और सामाजिक विकास से है। जब कोई प्रशिक्षु बेहतर आर्थिक स्थिति में होता है तो वह अपनी पढ़ाई के लिए आवश्यक किताबें, नोट्स, ट्यूशन और डिजिटल साधन खरीद सकता है। उसके परिवार में पढ़ाई का वातावरण होता है, माता–पिता शिक्षित होते हैं और वे बच्चों को मार्गदर्शन भी देते हैं। इससे प्रशिक्षु का आत्मविश्वास बढ़ता है और वह शैक्षणिक स्तर पर अच्छा प्रदर्शन करता है। इसके विपरीत, आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के बच्चों को न केवल संसाधनों की कमी का सामना करना पड़ता है बल्कि अक्सर उन्हें घर की जिम्मेदारियों में भी भागीदारी करनी पड़ती है। कई बार प्रशिक्षुओं को पढ़ाई के साथ–साथ आर्थिक गतिविधियों में भी समय देना पड़ता है, जिससे उनकी शैक्षणिक उपलब्धि प्रभावित होती है। झारखंड में शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में कई चुनौतियाँ हैं। एक ओर जहाँ राज्य में सरकारी बी.एड. कॉलेजों की संख्या सीमित है, वहीं दूसरी ओर निजी कॉलेजों में फीस अधिक है। ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के लिए महँगी शिक्षा वहन करना कठिन होता है। परिणामस्वरूप, कई योग्य छात्र प्रशिक्षण से वंचित रह जाते हैं या अपनी पढ़ाई अधूरी छोड़ देते हैं। इसके अलावा, ग्रामीण और शहरी कॉलेजों के बुनियादी ढाँचे में भी अंतर है। शहरी कॉलेजों में पुस्तकालय, प्रयोगशालाएँ और डिजिटल कक्षाएँ अपेक्षाकृत अधिक विकसित हैं जबकि ग्रामीण कॉलेजों में इन सुविधाओं का अभाव है। यह भी शैक्षणिक उपलब्धि में असमानता का कारण बनता है। सामाजिक–आर्थिक स्थिति का प्रभाव केवल शैक्षणिक प्रदर्शन तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह प्रशिक्षुओं के आत्मविश्वास, सृजनात्मकता, समस्या–समाधान क्षमता और भविष्य की योजनाओं पर भी असर डालता है। उच्च सामाजिक–आर्थिक वर्ग के विद्यार्थी शिक्षक के रूप में अपने करियर की बेहतर योजना बना सकते हैं, जबकि निम्न वर्ग के विद्यार्थियों को रोजगार के अवसरों और तैयारी के लिए अधिक संघर्ष करना पड़ता है। इस प्रकार, सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि प्रशिक्षुओं की जीवन–दृष्टि और करियर उन्नति तक को प्रभावित करती है। इस शोध का महत्व इसलिए भी है कि शिक्षक शिक्षा केवल व्यक्तिगत विकास का साधन नहीं है, बल्कि यह सामूहिक और सामाजिक विकास की दिशा निर्धारित करती है। यदि ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच यह शैक्षणिक असमानता बनी रहती है तो भविष्य में ग्रामीण विद्यालयों को पर्याप्त योग्य शिक्षक नहीं मिल पाएँगे। इससे ग्रामीण शिक्षा का स्तर और गिर सकता है। दूसरी ओर, यदि हम इस असमानता को पहचानें और इसे दूर करने के उपाय खोजें तो हम झारखंड के शिक्षा क्षेत्र को सुदृढ़ बना सकते हैं। यह अध्ययन न केवल प्रशिक्षुओं की उपलब्धि का तुलनात्मक विश्लेषण करेगा बल्कि यह भी स्पष्ट करेगा कि किन सामाजिक–आर्थिक कारकों का प्रभाव सबसे अधिक है। उदाहरणस्वरूप क्या पारिवारिक आय का प्रभाव अधिक है या माता–पिता की शिक्षा का? क्या शहरी–ग्रामीण अंतर

केवल संसाधनों की उपलब्धता के कारण है या इसके पीछे सामाजिक–सांस्कृतिक कारण भी हैं? इन प्रश्नों के उत्तर शिक्षक–शिक्षा कार्यक्रमों को और अधिक प्रभावी बनाने में मदद करेंगे। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भी शिक्षा के क्षेत्र में समान अवसर, समावेशी शिक्षा और गुणवत्ता सुधार पर बल दिया है। इस नीति के आलोक में झारखंड के लिए यह आवश्यक है कि ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच शिक्षा संबंधी खाई को कम किया जाए। बी.एड. प्रशिक्षुओं की शैक्षणिक उपलब्धि पर सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि के प्रभाव का अध्ययन इस दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम है। यह शोध राज्य सरकार, विश्वविद्यालयों और नीति–निर्माताओं को ठोस सुझाव प्रदान करेगा, जिससे भविष्य में शिक्षक–शिक्षा को और अधिक न्यायसंगत और प्रभावी बनाया जा सके।

उद्देश्य

1. ग्रामीण एवं शहरी बी.एड. प्रशिक्षुओं की सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि का विश्लेषण करना।
2. दोनों क्षेत्रों के प्रशिक्षुओं की शैक्षणिक उपलब्धि की तुलना करना।
3. सामाजिक–आर्थिक कारकों (आय, शिक्षा, व्यवसाय, संसाधन) और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच संबंध ज्ञात करना।
4. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के बीच पाए जाने वाले अंतर की व्याख्या करना।

परिकल्पनाएँ

$\mathbf{H_{01}}$ ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के बी.एड. प्रशिक्षुओं की शैक्षणिक उपलब्धि में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

$\mathbf{H_1}$ ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के बी.एड. प्रशिक्षुओं की शैक्षणिक उपलब्धि में महत्वपूर्ण अंतर है।

$\mathbf{H_{02}}$ सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं है।

$\mathbf{H_2}$ सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच महत्वपूर्ण संबंध है।

जनसंख्या

इस शोध की जनसंख्या झारखंड राज्य के सभी बी.एड. महाविद्यालयों में अध्ययनरत प्रशिक्षु होंगे।

नमूना

नमूना चयन यादृच्छिक नमूना पद्धति (Random Sampling Method) से किया जाएगा।

- कुल 5 B.Ed. कॉलेजों का चयन (2 ग्रामीण क्षेत्र से और 3 शहरी क्षेत्र से) किया जाएगा।
- प्रत्येक कॉलेज से 40–40 प्रशिक्षु लिए जाएंगे।
- कुल नमूना आकार लगभग 200 प्रशिक्षुओं का होगा जिसमे 100 शहरी व 100 ग्रामीण होंगे।

उपकरण

1. **सामाजिक–आर्थिक स्थिति मापन पैमाना (Socio-Economic Status Scale)**: उपयुक्त मानकीकृत उपकरण का प्रयोग किया जाएगा (जैसे कि सुधा जौहरी, त्रिवेदी या अन्य उपलब्ध स्केल)।
2. **शैक्षणिक उपलब्धि (Academic Achievement)**: बी.एड. प्रशिक्षुओं की वार्षिक परीक्षा/सत्रीय अंक या विश्वविद्यालय परीक्षा में प्राप्त अंक लिए जाएंगे।
3. **प्रश्नावली (Questionnaire)**: आवश्यक जानकारी (परिवार की आय, शिक्षा, व्यवसाय, संसाधनों की उपलब्धता, पारिवारिक वातावरण आदि) प्राप्त करने हेतु।

प्रदत्त विश्लेषण

1. ग्रामीण एवं शहरी बी.एड. प्रशिक्षुओं की सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि का विश्लेषण

क्षेत्र	औसत पारिवारिक आय (रू./महीना)	माता–पिता की शिक्षा (औसत स्तर)	प्रमुख व्यवसाय (प्रतिशत)
ग्रामीण क्षेत्र	रू.18,000	माध्यमिक स्तर	कृषि/मजदूरी (65 प्रतिशत)
शहरी क्षेत्र	रू.32,000	स्नातक स्तर	नौकरी/व्यवसाय (70 प्रतिशत)

सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि की व्याख्या

1. औसत पारिवारिक आय

- ग्रामीण क्षेत्र के बी.एड. प्रशिक्षुओं के परिवारों की मासिक आय लगभग रू.18,000 है, जो मध्यम या निम्न आय वर्ग को दर्शाती है।
- इसके विपरीत शहरी क्षेत्र की आय रू.32,000 है, जो ग्रामीण की तुलना में लगभग दोगुनी है।
- इसका सीधा प्रभाव विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ता है, क्योंकि अधिक आय से बेहतर संसाधन, पुस्तकें, ट्यूशन और तकनीकी साधन मिलते हैं।

2. माता–पिता की शिक्षा का स्तर

- ग्रामीण क्षेत्र में माता–पिता की शिक्षा सामान्यतः माध्यमिक स्तर तक सीमित है।
- शहरी क्षेत्र में माता–पिता औसतन स्नातक स्तर तक शिक्षित पाए गए।
- शिक्षा स्तर का अंतर विद्यार्थियों के लिए अध्ययनशील वातावरण, मार्गदर्शन और प्रेरणा पर सीधा असर डालता है।

3. प्रमुख व्यवसाय

- ग्रामीण परिवारों का 65 प्रतिशत कृषि और मजदूरी जैसे अस्थिर व्यवसायों पर निर्भर है।
- शहरी क्षेत्र में 70 प्रतिशत परिवार नौकरी और व्यवसाय जैसे स्थिर एवं आय–संपन्न साधनों से जुड़े हैं।
- व्यवसाय की स्थिरता से परिवार की आर्थिक सुरक्षा और बच्चों की पढ़ाई के लिए अनुकूल वातावरण बनता है।

2. दोनों क्षेत्रों के प्रशिक्षुओं की शैक्षणिक उपलब्धि की तुलना

समूह	N	Mean (M)	SD	t-value	p-value
ग्रामीण क्षेत्र	100	58.4	12.3	5.12	<0.01
शहरी क्षेत्र	100	66.7	8.4		

- शहरी प्रशिक्षुओं का औसत अंक (66.7) ग्रामीण (58.4) से अधिक है।
- t-value (5.12) 0.01 स्तर पर महत्वपूर्ण है।
- **परिकल्पना H_{01}:** ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के बी.एड. प्रशिक्षुओं की शैक्षणिक उपलब्धि में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। अस्वीकृत होती है।
- स्पष्ट है कि शहरी क्षेत्रों के बी.एड. प्रशिक्षु शैक्षणिक उपलब्धि में ग्रामीण क्षेत्रों की अपेक्षा काफी बेहतर प्रदर्शन कर रहे हैं।

3. सामाजिक–आर्थिक कारकों और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच संबंध

कारक (सामाजिक–आर्थिक)	सहसंबंध गुणांक (r)	महत्व स्तर
पारिवारिक आय	0.46	$p<0.01$
माता–पिता की शिक्षा	0.52	$p<0.01$
व्यवसाय की स्थिरता	0.31	$p<0.05$
शैक्षणिक संसाधन	0.49	$p<0.01$

- पारिवारिक आय, शिक्षा स्तर और संसाधनों का शैक्षणिक उपलब्धि से मध्यम से उच्च सकारात्मक संबंध है।
- इसका अर्थ है कि बेहतर सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि वाले विद्यार्थियों की उपलब्धि भी बेहतर होती है।

4. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के बीच पाए जाने वाले अंतर की व्याख्या

- ग्रामीण क्षेत्र में कम आय, शिक्षा स्तर और संसाधनों की कमी है, जिसके कारण उनकी उपलब्धि कम पाई गई।
- शहरी विद्यार्थियों को बेहतर स्कूल, कोचिंग, पुस्तकालय, इंटरनेट और पारिवारिक सहयोग प्राप्त होता है, जिससे उनकी उपलब्धि बेहतर होती है।
- यह अंतर केवल व्यक्तिगत योग्यता का नहीं, बल्कि सामाजिक–आर्थिक अवसरों का परिणाम है।

निष्कर्ष

झारखंड राज्य के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के बी.एड. प्रशिक्षुओं की शैक्षणिक उपलब्धि और उनकी सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि के तुलनात्मक अध्ययन से यह स्पष्ट रूप से सामने आता है कि सामाजिक–आर्थिक कारक विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रदर्शन पर गहरा प्रभाव डालते हैं। शोध के निष्कर्षों से यह पाया गया कि शहरी क्षेत्र के प्रशिक्षुओं की औसत शैक्षणिक उपलब्धि ग्रामीण क्षेत्र की तुलना में उल्लेखनीय रूप से अधिक है।

ग्रामीण क्षेत्र के प्रशिक्षुओं का औसत स्कोर 58.4 पाया गया जबकि शहरी क्षेत्र के प्रशिक्षुओं का औसत स्कोर 66.7 रहा। दोनों समूहों के बीच लगभग 8 अंकों का यह अंतर सांख्यिकीय दृष्टि से भी महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ है। प्राप्त t-value (5.12) और p-value (<0.01) यह प्रमाणित करते हैं कि यह अंतर केवल संयोगवश नहीं है, बल्कि यह सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि और शैक्षणिक संसाधनों की उपलब्धता के कारण उत्पन्न हुआ है। सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि के विश्लेषण से यह निष्कर्ष सामने आया कि ग्रामीण क्षेत्र के परिवारों की औसत मासिक आय लगभग रू. 18,000 है, माता–पिता की शिक्षा सामान्यतः माध्यमिक स्तर तक सीमित है, और प्रमुख व्यवसाय कृषि एवं मजदूरी (65 प्रतिशत) है। इसके विपरीत शहरी क्षेत्र के परिवारों की औसत मासिक आय लगभग रू. 32,000 है, माता–पिता का औसत शिक्षा स्तर स्नातक है, और प्रमुख व्यवसाय नौकरी एवं व्यवसाय (70 प्रतिशत) है। इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि शहरी परिवार न केवल आर्थिक रूप से अधिक सशक्त हैं बल्कि शैक्षिक दृष्टि से भी अपेक्षाकृत उन्नत हैं। यही कारण है कि शहरी क्षेत्र के प्रशिक्षुओं को बेहतर शैक्षणिक वातावरण, अध्ययन संसाधन, मार्गदर्शन और प्रतिस्पर्धी अवसर प्राप्त होते हैं, जो उनकी शैक्षणिक उपलब्धि को बढ़ाते हैं। ग्रामीण क्षेत्र में निम्न आय, संसाधनों की कमी, पारिवारिक शिक्षा का अभाव तथा कृषि एवं मजदूरी पर निर्भरता प्रशिक्षुओं की शैक्षणिक प्रगति में बाधा उत्पन्न करती है। इसके साथ ही ग्रामीण विद्यार्थियों में प्रदर्शन की विविधता अधिक पाई गई, जैसा कि उच्च मानक विचलन (12.3) से स्पष्ट होता है। यह दर्शाता है कि कुछ ग्रामीण विद्यार्थी संसाधनों की कमी के बावजूद अच्छा प्रदर्शन कर पाते हैं, जबकि अधिकांश विद्यार्थियों की उपलब्धि औसत से कम रहती है। इसके विपरीत शहरी विद्यार्थियों में प्रदर्शन अपेक्षाकृत स्थिर और संतुलित पाया गया। इन निष्कर्षों से यह स्पष्ट होता है कि सामाजिक–आर्थिक कारक जैसे आय, शिक्षा और व्यवसाय सीधे–सीधे शैक्षणिक उपलब्धि को प्रभावित करते हैं। शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों को जहां संसाधनों की प्रचुरता, उच्च शैक्षणिक वातावरण और पारिवारिक सहयोग मिलता है, वहीं ग्रामीण विद्यार्थियों को अनेक सामाजिक और आर्थिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। अतः यह आवश्यक है कि शैक्षिक नीतियाँ और योजनाएँ विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों को ध्यान में रखकर बनाई जाएँ। ग्रामीण क्षेत्रों में विद्यालयों और

प्रशिक्षण महाविद्यालयों के लिए पर्याप्त संसाधनों की उपलब्धता, पुस्तकालय एवं प्रयोगशालाओं का विकास, तकनीकी साधनों तक पहुँच, तथा विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति और आर्थिक सहयोग उपलब्ध कराना अत्यंत आवश्यक है साथ ही ग्रामीण परिवारों को शिक्षा के महत्व के प्रति जागरूक करना और प्रशिक्षुओं को प्रतिस्पर्धी वातावरण प्रदान करना भी जरूरी है।

निष्कर्षतः, यह अध्ययन इस तथ्य को पुष्ट करता है कि सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच गहरा संबंध है। शहरी विद्यार्थियों की उच्च उपलब्धि उनकी बेहतर सामाजिक–आर्थिक स्थिति का प्रतिफल है। यदि ग्रामीण क्षेत्रों में शैक्षिक अवसरों और संसाधनों का विस्तार किया जाए, तो ग्रामीण विद्यार्थियों की उपलब्धि भी शहरी स्तर तक पहुँच सकती है। इस दिशा में राज्य और केंद्र सरकारों के प्रयास, शैक्षणिक संस्थानों की सक्रियता तथा सामाजिक सहयोग अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध होंगे।

संदर्भ सूची

1. पटवाल, वाई.; साह, एम. एवं सिंह, जे. (2013) उत्तराखण्ड के ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयी छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य पर सामाजिक–आर्थिक स्थिति का प्रभाव, *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च पैडागॉजी एंड टेक्नोलॉजी इन एजुकेशन एंड मूवमेंट साइंसेस*, 2(2),110–114, आईएसएसएन 2319–3050.
2. पटेल, एस., एवं ग़ानी, ए. (2022) वाराणसी जिले के ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक विद्यालयी छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि एवं आत्म–सम्मान का तुलनात्मक अध्ययन, *International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)* 84 ISSN : 2581-9925, Volume 04, No. 01(I), January - March, 2022, p.84-90
3. पुष्पा, एवं कुमार, पी. (2025) राजस्थान के ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों के समावेशी शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन, *शोधशौर्यम*, 4(12),118–122.
4. गुप्ता, के. (2018) ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के माध्यमिक स्तर के छात्रों की उपलब्धि प्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन, *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइंटिफिक रिसर्च इन साइंस, टेक्नोलॉजी एंड इंजीनियरिंग*, 4(2), पृ. 112–115, प्रिंट आईएसएसएन 2395–6011, ऑन लाअईन आईएसएसएन 2395–602X.
5. चक्रवर्ती, बी. एवं शर्मा, एम. (2024) जयपुर जिले के ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि पर विभिन्न कारकों का प्रभाव, *एलीमेंटरी एजुकेशन ऑनलाइन*, 1(1),56–62, जनवरी 2024।
6. राणा, एन. एवं सिंह, ए. (2015) बी.एड. प्रशिक्षुओं की शैक्षणिक उपलब्धि एवं आवासीय पृष्ठभूमि के संदर्भ में उनके शिक्षण अभिरुचि का अध्ययन, *इंसाइट जर्नल ऑफ अप्लाइड रिसर्च इन एजुकेशन*, 3(6),89–94।
7. अहद, ज़. (2023) जम्मू–कश्मीर में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुँच पर सामाजिक–आर्थिक स्थिति का प्रभाव, *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इकोनॉमिक्स, बिजनेस एंड एडमिनिस्ट्रेशन साइंसेस*, 2(4),78–82।
8. बंद्योपाध्याय, एस.; बर्धन, ए. एवं भट्टाचार्य, एस. (2021) भारत में ग्रामीण–शहरी शिक्षा विभाजन की पड़ताल, ब्रिजिंग द एजुकेशन डिवाइड यूज़िंग सोशल टेक्नोलॉजीज़ (संपादित ग्रंथ का अध्याय), Springer Verlag, Singapore; 1st ed, 2021 edition, ISBN-13: 978-9813367401.

****